

साधु और चूहा

महिलरोपयम नामक एक दक्षिणी शहर के पास भगवान शिव का एक मंदिर था। वहां एक पवित्र ऋषि रहते थे और मंदिर की देखभाल करते थे। वे भिक्षा के लिए शहर में हर रोज जाते थे, और भोजन के लिए शाम को वापस आते थे। वे अपनी आवश्यकता से अधिक एकत्र कर लेते थे और बाकि का बर्तन में डाल कर गरीब मजदूरों में बाँट देते थे जो बदले में मंदिर की सफाई तथा सजावट का काम किया करते थे।

उसी आश्रम में एक चूहा भी अपने बिल में रहता था और हर रोज कटोरे में से कुछ न कुछ भोजन चुरा लेता था।

जब साधु को एहसास हुआ कि एक चूहा भोजन चोरी करता है तो उन्होंने इसे रोकने के लिए सभी तरह की कोशिशें की। उन्होंने कटोरे को काफी उचाई पर रखा ताकि चूहा वहां तक पहुँच न सके, और यहां तक कि एक छड़ी के साथ चूहे को मार भगाने की भी कोशिश की, लेकिन चूहा किसी भी तरह कटोरे तक पहुंचने का रास्ता ढूंढ लेता और कुछ भोजन चुरा लेता था।

एक दिन, एक भिक्षुक मंदिर की यात्रा करने के लिए आये थे। लेकिन साधु का ध्यान तो चूहे को डंडे से मारने में था और वे भिक्षुक से मिल भी नहीं पाए, इसे अपना अपमान समझ भिक्षुक क्रोधित होकर बोले आपके आश्रम में फिर कभी नहीं आऊंगा क्योंकि लगता है मुझसे बात करने के अलावा आपको अन्य काम ज्यादा महत्वपूर्ण लग रहा है।”

साधु विनम्रतापूर्वक चूहे से जुड़ी अपनी परेशानियों के बारे में भिक्षुक को बताते हैं, कि कैसे चूहा उनके पास से भोजन किसी न किसी तरह से चुरा ही लेता है, “यह चूहा किसी भी बिल्ली या बन्दर को हरा सकता है अगर बात मेरे कटोरे तक पहुंचने कि हो तो! मैंने हर कोशिशें की हैं लेकिन वो हर बार किसी न किसी तरीके से भोजन चुरा ही लेता है।

भिक्षुक ने साधु की परेशानियों को समझा, और सलाह दी, “चूहे में इतनी शक्ति, आत्मविश्वास और चंचलता के पीछे अवश्य ही कुछ न कुछ कारण होगा”।

मुझे यकीन है कि इसने बहुत सारा भोजन जमा कर रखा होगा और यही कारण है कि चूहा अपने आपको बड़ा समझता है और इसी से उसे ऊँचा कूदने कि शक्ति मिलती है।

चूहा जानता है कि उसके पास कुछ खोने के लिए नहीं है इसलिए वो डरता नहीं है।” इस प्रकार, साधू और भिक्षुक निष्कर्ष निकालते हैं कि अगर वे चूहे के बिल तक पहुंचने में सफल होते हैं तो वे चूहे के भोजन के भंडार तक पहुंचने में सक्षम हो जाएंगे। उन्होंने फैसला किया कि अगली सुबह वो चूहे का पीछा करेंगे और उसके बिल तक पहुंच जाएंगे।

अगली सुबह वो चूहे का पीछा करते हैं और उसके बिल के प्रवेश द्वार तक पहुंच जाते हैं। जब वो खुदाई शुरू करते हैं तो देखते हैं की चूहे ने अनाज का एक विशाल भंडार बना रखा है, फौरन ही साधु ने सारा चुराया गया भोजन एकत्र करके मंदिर में लेजाने को कहा है।

वापस आने पर अपना सारा अनाज गायब देख चूहा बहुत दुखी हुआ और उसे इस बात से गहरा झटका लगा और उसने सारा आत्मविश्वास खो दिया।

अब चूहे के पास भोजन का भंडार नहीं था, फिर भी उसने फैसला किया कि वो फिर से रात को कटोरे से भोजन चुराएगा। लेकिन जब उसने कटोरे तक पहुँचने की कोशिश की, तब वह धडाम से नीच गिर गया और उसे यह एहसास हुआ कि अब न तो उसके पर शक्ति है, और न ही आत्मविश्वास।

उसी समय साधु ने भी छड़ी से उसपर हमला किया। किसी तरह चूहे ने अपनी जान बचायी और भागने में कामयाब रहा और फिर वापस मंदिर कभी नहीं आया।

"यदि हमारे पास संसाधनों की कमी न हो तो हम मे भी अद्भुत शक्तियां और आत्मविश्वासकमी कभी नहीं आ सकती।"

भाएँ और एका

भक्तिरूपेण नभक एक द्वािणी मरु क पोम रुगवान मिव का एक भक्तिर घा वरुा एक पवित्र अधि ररुउ घे और भक्तिर की द्वािणाल करउ घावे-
द्विबा क लिए मरु मरु ररे एउ घे, और हरेन क लिए माभ क वेपम मुउ घा-
व भपनी मुवमकुउ म भेणिक एकउ कर लउ घे और मकि का मरु मरु मरु क
गरीम भएए मु भेगए एउ घे ए वेदल भेभक्तिर की मरु उघा भएवए का काभ
किया करउ घा-

उभी मुमभ भक्तिर एका ही भपन मिल भरेरुउ घा और कर ररे कएरे भ-
म कुरु न कुरु हरेन एका लउ घा।

एव भाएँ क एकाभ रुमु कि एक एका हरेन एरी करउ रुउ उरुने उभ-
रकेन के लिए मरी उरु की कमिम की। उरुने कएरे के केदनी उरुा पर रापा
उकि एका वरुा उक परुण न भक, और वरुा उक कि एक कृती क भाष एका के
भाएँ रुगान की ही कमिम की, लकिन एका किभी ही उरु कएरे उक परुणन का
राभु एका लउ और कुरु हरेन एका लउ घा।

एक दिन, एक द्विक्क भक्तिर की याउ करन के लिए मुघ घालकिन भाएँ,
का एका उ एका के रुउ भे भेगान भेघा और व द्विक्क मभिल ही नकी पाए, उभ-
भपना भपना मभाएँ द्विक्क कृणुउ रुकेर गले मुपक मुमभ भक्तिर कही नकी
मुउगा कृकि लगउ रु भेगाम गउ करन के गेला व मुपक भेन कभ एका
भरुउपुरु लगे रुका रु।

भाएँ विनभुपुत्रक एका मे एकी भपनी परमोनिष के गेर भे द्विक्क क
गउउ रु, कि कमे एका उरु क पोम म हरेन किभी न किभी उरु म एका की लउ
रु, वरु एका किभी ही द्विक्क मरु क केरा भकउ रु भेगाम गउ भरे कएरे उक
परुणन कि रु उे भरे रु क कमिम की रु लकिन वरु गार किभी न किभी उरीक भ-
हरेन एका की लउ रु।

द्विक्क न भाएँ की परमोनिष के भेभाएँ, और मला रु एी, "एका भेउउनी
मकि, मुउद्विमाम्भ और एका लउ क पीक भेवमरुनी कुरु न कुरु करु रुगे"।

भाएँ येकीन रुकि उभन गेरु मारा हरेन एभा कर रापा रुगे और वरी
करु रुकि एका भपन मुपक गेरा मभाएँ रु और उभी म उम उे गिा कुरुन कि
मकि, भिलडी का एका एनउ रुकि उभक पोम कुरु एने के लिए नकी रु उभलिया
वरेरु नकी रु।

उभ प्रकार, भाएँ और द्विक्क निष्कृणिकालउ रुकि मगर व एका के मिल
उक परुणन भेभदल रुउ रुउ वे एका के हरेन क हरेर उक परुणन भेभदम रु
रागो उरुने देमैला किया कि मगली भुरु व एका के पीका करगे और उभक
मिल उक परुण रागो।

मगली भुरु व एका के पीका करउ रु और उभक मिल क प्रेम एका उक
परुण एउ रु एका वीपरा मरु करउ रुउ एके रुकी एका ने मनाए का एक
विमल रुगार मना रापा रु, देरन की भाएँ नभारा एका व गघा हरेन एकउ
करक भक्तिर भलेन के केरा रु।

वपम मुन पर भपना मारा मनाए गा वरु एके एका मरु एपी रुमु और
उभ उभ गउ मनेकरा एका लगा और उभन मारा मुउद्विमाम्भ एके दिया।

मम एरु के पाम रुएन का रुंर नलीं घा, ढिर सी उमन ढमैला किय कि वं ढिर म रौउ क केएरे मे रुएन एरुएगा लकिन एम उमन केएरे उेक परुंन की कमिम की, उम वरु एरुम म नीं गिर गया एरु उम येरु एरुमाम रुमु कि मम न उे उेमक पर मक्रु, एरु न नी मुउविसादम।

उमी मभय भाए न सी ळरी म उेमपर रुभला किय। किमी उरु एरु ने मपनी एन मगाथी एरु हागन मे केाभयार ररु एरु ढिर वपम भंरि कसी नलीं मुघा।

"यदि रुभार पाम मंभाएन की कभी न रु उे केम मही मरुडु मक्रुं एरु मुउविसादम कभी कसी नलीं मु मकती।"

मनराए - विरु केल एला